

जप वकाषको जरावे ॥ तै सेंही अंतरजोमीनी तरहे तिन
३१ को जीववध्याहे ताके मोक्षमें सोमर्थनोही तातें गु
रु आवसजवकर्ण द्वारा हृदयमें प्रवेश करे ॥ तवका
महोद ॥ अंतः ॥ अविष्टो नगवान्मुखा उधृत्यकर्ण
योः ॥ पुनर्जि विस्पते सम्पकृतदावे नवति सुस्थि
रः ॥ तातें श्रुत उपदेश आवस्य कहें ॥ बिना श्री वैश
वादिष्टा प्रसाद सद्गुरु किं जा ॥ बिना श्री वैश्वधर्म
कथं नागवतो न वेत ॥ तहां गुरु वैश्वहोइ वैश्वधर्म
में च लत होइ ॥ महत कुल प्रसूतो यस्य वसुधै क
वि दितः ॥ सस्मसाया अर्चन गुरुः ॥ सादृश्व
दिष्टा ली एते कालवाधक जकरो ॥ न तिष्ठति विना
शत्रे गमासादि विचारना ॥ दिष्टा या कारणात्तत्र स
ध्या प्राप्ते न सद्गुरौ ॥ सद्गुरपाइ के ठी लजकरो ॥ उपदे
स न लेइ तो बाधक रहे ॥ अदिक्षित स्वयंमें रुद्धत
सर्व निरर्थक ॥ पशु योनि मवाप्नोति दीक्षाही नो
मृतो नरः ॥ सद्गुरु च हिये ॥ कृष्णसेवा परं वीक्ष्य

दनादिरहंतं नरः ॥ श्री नागवत तत्त्वज्ञ न जे जिह्वा सु
गदगत ॥ नर होइ तहां वहु वेटी को असे हे पति वि
राजे तहां ताई नाम न देइ ॥ गारी न वेठे वीरी नोही
आरोगे ॥ पक्षि अंतर्ध्यान होइ वहु के हृदय हृदयमें प
धार ॥ तातें नाम देइ गारी वेठे वीरी आरोगे ॥ याही
भाति वहु जीपी वेठे वेटी जी नाम देइ वीरी आरोगे
नर पदमें प्रभुते प्रगटे ॥ जीव मात्र सब नरहे ॥ या प्रका
र सब कहो न ज न हूं पुष्टि मार्गमें सार स्वतः कल्पके ॥ पू
ले पुरा होत मयां करे ॥ कल्प सार स्वतः प्राप्त वजे गोप्या
न विषयति ॥ आरकृष्णमें पूर्ण कृष्ण नही ॥ हर रसा विहा
ग तो सित कृष्ण के सोइति ॥ कल्पे स्मिन् सर्वमृत्युर्थमि
वतीर्णोति सर्वतः ॥ इति ॥ प्रभु की भेट जन्मादमी पाल
ना विराजे तव हृदरी पवित्रा ती नो भेट गुरु के घर जा
इ ॥ वैश्वधर्म के घर समाजमें महा प्रसाद को जे ये हन
विचार तहां वहुत सांमि ग्रीह ॥ मे प्रभु को नोही धरी
के से जेव ॥ प्रभु मंदिर के नाव सो विराजे हो ॥ सो मंदिर में

अप सवसांमित्री प्रागेगेहोताते अपने सोवन सो धरिक्
 ३२ जै ए प्रसाद लीजे प्रै सैन कर तो समा जन चले नेदम
 हिरकी के स निक्से वै सवके गकुर मर्यादान पाले लाके
 गकुर न्यारे वै न्यारे भोग धरे मर्यादा पाले लाके गले
 बैठे मर्यादान पाले ता सो आवस्य जरू होइ तो सेवा
 करावे पावे अपर सकाठके प्राप करे अनसर डीकी
 सांमित्री मर्यादान पाले तोहं अनकुंठ आदि उत्सवों
 आवस्य होइ तो करावे श्री मुख लिराव्यो हे न मुजो पा
 न कीयो हे तोहं आवस्य में करावे चने तहां लाई म
 दी सो करावे मंदिर में सां चोरा आदि करे लाकी वि
 तानो ही तहां श्री यमुना जी को प्रवाह हे वै सवको हा
 विचार मंदिर की अनसर डी नाम पायो हे वै सव
 तथा व्रजवासी के हाथ को लेत हे भगवान पंच ध्या
 इ में कह हे न पार पे हं निरवदा संमुजो स्वसा धुलत
 विनु धामु पा एव या प्रकार मुखते कह ताते श्री मुख
 को अवतार श्री आचार्यजी प्रगट होइ स्वां मनी के

भावकी सेवा को ए ॥ इति श्री जपको प्रकार श्री गावु
 लनाथजी कृत्य संपूर्ण ॥ मिरराजजी सिंहासत हे
 ताते चरण दंडोति सिंजामुख पुजनी सिंहा ॥ गिररा
 जजी को पधगवे तब मिरराज की घेट श्री जोथजी ॥
 कीहो गावई न के पति हे सव तीर्थ प्रयागराजा पास
 गये व्रजनां ही सो याते वृक्षे वृक्षे वै एधारी पत्रे पत्रे
 चतुर्ज ॥ पत्र वृंदावन तत्र जांता सो न कथा कुत ॥ प
 थो पथो गाय रूप सगरी गाय के रोम प बित्र हे परतु
 इध रूप धन व्रज ही हो व्रज कमला कार हे लीला पयो
 गो हे पूर्ण विकास अर्ध विकास संकुचित एक पनुरी
 सुले रितु विना फूल फूल हरित ताते के सो सर दो लु
 लम धिका ॥ अजौ कि क जी ला व्रज में सव अलौ कि
 क सो मित्री हो जुगल सरूप ते सव प्रगटी हो जहो छ
 हो रितु को वर्णन करत हो वसंत ॥ अधरज की अ
 रुनाई कुं ज में फेला ताते गुलाल प्रगट नयो को मल
 श्री हस्त की माई सवजरूप नव पत्र मम ए नख शत

भा- तेकेसूके फूलनए ॥ कंकनकी मोईले चित्रविचि
 ३३ जगरी प्रगटी ॥ उज्वलहांसते अवीर प्रगटी ॥ जत्र
 जके अरुणसेतस्योम कटाधते केसर प्रगटी जा
 जा प्रकारके फूल प्रगटी ॥ श्री अंगते केसर प्रग
 टी ॥ स्याम कटाधते तथा श्री यमुजाजी ते चावा ॥ क
 संतमं हास्य विनोद उदी पननाव करि पाछे विहा
 रया प्रकार बुं जमै जुगल सरूप ली जा करतहे ॥ छि
 जु न्यारे जाही ॥ सो कवहं निद्रामे दोउ सरूप उरु क
 हे ॥ जो दू सरोसरूप कहाहे ॥ जहां लो दूसरे सरूप के
 अस्थित को ज्ञान होइ ॥ इतने में विरह ताप होत
 ताते कुंज में ग्रीष्म रितु फलतहे ॥ अत्यंत ताप
 उपयोगी चंदन अरु गजा गुलाब जल सो सखी जत
 न करतहे ॥ अरु गजा चंदन के सर अंग के रूप गुला
 व जल मुरति श्रम ले छिरकतहे जो यादूं करिके इ
 सरे सरूप को ज्ञान होइ ताप भटे ॥ दंतावली ते मो
 ती को माला प्रगटी ॥ अनेक रंग के महल चोवार श्री

भजनते प्रगटी ॥ लीलारस की अधिक पते ग्रीष्म मेह
 श्रम रूप रजा परतहे ॥ पना अ धरा मृत को पाज ॥ वि
 रह स्वास के लहने पुंज सगरी त प्रहोतहे ॥ रचन के पा
 त सगरे सूख जातहे ॥ सगरी वस्तु में उस्तता होतहे ॥
 ॥ या प्रकार ग्रीष्म रितु हे ॥ पाछे दोउ स्वरूप बुं जतें नि
 कास दार परगटे होतहे ॥ तब वर्षा रितु फलतहे वि
 रह पीछे रस वहुतहे सो जी जमे घस्याम प्रभु के स
 रूप की आना श्री स्वांमि जी की अंगते विद्युत् ॥ मु
 कावली ते वग पंक ति मुरली को जाद तथा स्वांमि जी
 को राग तथा सखी जत के गांनते ॥ काइल मोर दाडुर
 गी गुर अनेक बुंज प्रगट नई प्रभु को जित दिस मोर
 जित करतहे ॥ सगरी सखी जपर तथा सगरे वज्र में जु
 गल सरूप के सरूप अमृत कटाध परतहे ॥ सो वरखा
 बरखतहे ॥ ताकरिके अनेक फूल वारी व्रज प्रकनकी
 सोभा रूप फलतहे ॥ सगरे वन विरह रूपी ग्रीष्म ते
 सखी हुती ॥ सोरस पाइ हरित होत नई ॥ तां करिके स्वां

भावः (मनीरूपवेली प्रभूको स्वरूप तमाल रूप तहो वेल
३५ तजई यह वरखा रितु ॥ अवसरद (रतुको प्रकार क
हते ॥ कवटू जुगल स्वरूप महल के ऊपर विराजत है
॥ तब श्री स्वा (मनी जी के मुषार बिंद रूप चंद्रमा की उज्ज
यारी दसो दिसा बजने महारसरूप फैलत है ॥ तैसे ही
श्री अंग की कीड़ा अनेक किरण रूप ता करि निर्मल
आकास मनयो ॥ प्रभूको अंग महा स्यां मध घन आ
कास है ॥ परंतु श्री स्वा (मनी जी के मुख चंद्र करि न
आकास श्री अंग रूप प्रभूको होत है ॥ जैसे मरुदास
के अनुसार श्री स्वा (मनी जी के के सह आकास रू
ह ॥ ता करि ॥ परम सोनाय मांजरात होत नई सरस
तुकी तहां वेली फूल जसो गुरी है ॥ तथा अनेक मोती
हारा आदिके आभूषण अनेक प्रकार के ॥ छोटे बड़े ता
रामंडल सो भादत है ॥ श्री मुख तें जा सकात स्वास च
लत है तातें सीतल मंद सुगंध वायु वहत है ॥ अलौ
किक चंद्रमा पार के ॥ कमल कमोदनी सरखी अनेक

स्वामिनी फूल गरी है ॥ मातिज की माल सोई सुंदर
सरोवर नरिर है ॥ तहां अनेक नय पतिके रास
मंडल व्रज मे होत है ॥ अवसर मंत प्रार सिसर
रितुको प्रकार यह ॥ जुगल स्वरूप चंद्रग में तथा जित
कुंज में द्विमें से न्या पर मिलन होत है ॥ ता करि वि
रहता पद रिद्धे जात है ॥ हृदय परम सीतल होत है
ता करि कुंज में सीतल फैलत है ॥ तहां अंग ज सीत
में सुषदाय कहें तब श्री गुरुजी के मुख तें आधि
रे विक अंग प्रगट होत है ॥ तामें उत्तम उत्तम सां
॥ मिग्री नक्त जके अंग रूप सिद्धि होत है ॥ सो प्रभु प्र
नुभव करि जाग करत है ॥ तातें सित काज में बीजा
प्रकार की सो मिग्री मंदिर में होत है ॥ यह धर रितुको
प्रकार तथा एक दिन में छह रितुको अनुभव प्रभु कर
त है ॥ मंगला तें राज जाग ताई वसंत रितुको जाग ॥ प्रबो
ध जोतें माह सुदी ॥ ताई लीला में वसंत रितु धर धर
री रात सो लगत है सो चारि धरी दिन च छ पहर १० ॥

रितु घरी तार्द वसंत रितु ताते सित फावर मे वे गरा ज भोग
 ३५ आवत है ॥ वसंत पंचमी ते का तिक सुदी १० ॥ तार्द जो
 लामे वसंत रितु प्रात काव ते दस घरी दिन चढे तहां
 जोर हत है ॥ ताते वने तो घरी १० ॥ मं मंगलारा ज भोग
 करिए यह वसंत रितु ॥ राज भोग प्रारती पीछे ग्रीक
 मरितु जहां तार्द उत्थापन भोग प्रारोगे तहां तार्द ॥ ता
 ते उत्थापन भोग में सीतल सांमि ग्री फल आदि कथा
 त है ॥ पाछे भोग के दर्शन पुलत है तव वर सा रितु हो
 त है ॥ कुंज ते घर को पधारत है तव मारग में अनेक
 व्रज भक्तन के कटाछ श्री गुरुजी के नेत्र नंदी ॥
 सरूप धारवा वरत है ॥ तहां मारग में वर सा रितु को
 भोग प्रभु करत है ताते भोग के दर्शन वडी बेर तांई होत
 है ॥ संता प्रारती ते ग्वाल भोग यह सरद रितु गोदेह
 न उज्जल छे या पान व्रज भक्तन सो हास्य कटाछ
 होत है ॥ सर्व प्रकार के विहार यह सरद संज भोग में
 ताती जोतन सांमि ग्री ताते है मंत में सीसर मे

सांमि ग्री होम है ॥ यह निबुंज के नावत है नातरन
 दाजय में तथा निबुंज में आरोग त है नातर ॥ पी
 छे सीसर रितु निबुंज में से न करवावत है से न्या
 भोग आरुध आदि विहार पीछे अनुपान घरी
 है ॥ रितु छह दस दस घरी में एक एक रितु होइ या
 प्रकार निबुंज में १० प्रकार के भक्त है ॥ तिन के रस को
 अनुभव प्रभु करत है ॥ तहां रात्रि दिन हूं अजौ कि
 कहै ॥ कोई समय दिवस को जो लामे साक्षात के
 तिरात विपरीत को मज होत है ॥ तव तहां रात्रि को
 काम परत है ॥ तव तहां श्री स्वांमिजी जी के सघन
 सचिकन के सकी आनातर गजत है ॥ तामे दिवस
 को प्रकास सब लोभ दे जात है ॥ अधियारी रात होत
 है तही कछु दो सतनाही तव सुंदर मुख परस्पर अ
 बलोकन की चाह होत है ॥ तव श्री स्वांमिजी जी के
 मुख ते सुंदर चंद्रमा सारह कला संजुक्त प्रगट होत है
 ॥ कसमें अनेक पुष्प माती आदि के आभूषण सो

३.६ रि ३०८ वडे ॥ तारामंडल प्रगट होत है ॥ तवरसको
 उदीपन होत है ॥ रीत विपरीत विरह में आभूषण
 ए प्रंगराग प्रस्त विस्त होत है ॥ मोतिन के हार मणि
 न के हार फूलन की माला दूटत है ॥ श्रम दोउ स्वस्व
 को होत है ॥ तव श्रंगार करनार्थ तथा मुक्ता फल
 विखरे है ॥ सोवी नन के प्रर्थ दिवस को काम परत
 है ॥ तव श्री स्वांमिनी जी के कर्ण में हीरा के सुंदर
 जडाउं ताटंक है तामेले ॥ सूर्य प्रगट होइ को प्रकाश
 सकरत है ॥ अधरन की प्ररणाई ताकी धरती पर
 एा किरणा कुंज में फेलत है ॥ याही प्रकार गीत
 रासमय समय की रागरागनी प्रगट होत है ॥ अ
 नेक सां मिश्री वस्त्र आभूषण सब जुगल सरूपत
 प्रगट नयो है ॥ ताते लीला सखि मंदिर की सां मिश्री
 में प्रलौकिक बुद्धि विचारिये ॥ प्रभु आउदया
 करि नक्तन को अनुभव करावे सो उध्व कहिए ॥ न
 क प्रनेक प्रकार की वस्तु सो प्रभु की सेवा करे सो

मनोरथ कहिए ॥ नन्माधमी प्रभु अपनै निजर
 नक्तन पर प्रभु ग्रह करनार्थ प्रगटे ॥ ती नोज
 यंती नक्त उधार कहें ताते उत्सव श्री आचार्य जी
 श्री गुसाई जी है विजीव के उधार करगधा प्रधमी
 मुख्य श्री स्वांमिनी जी द्वारा सगर व्रज नक्तन को
 अनुभव नयो ॥ भादो मुदी ॥ १ ॥ को श्री चंद्रावली
 जी को प्रागट सो सगरी कुंज की सेवा प्रगट करी
 पर कियारस की वृद्धि करन वारी ॥ दोन एकादसी
 प्रभु दोन के मिस प्रथम गोरस प्रधरा मृत पान
 की एकरा ॥ रासोत्सव में श्रुति रूपा कुंमारि कार
 को रस दोन अज तेर सनिध लीलामें श्री स्वांमि
 नी जी नै श्री गुरु जी ते पूछ्यो तुम प्रोर व्रज क
 र सो विहार करत हो सो मोते हूँ क हूँ अधिक सु
 ख है ॥ तव प्रभु कहें तुम ते अधिक सुख तो नाही
 है ॥ तुम्हारे पास सु कियारस है सो वेद में प्रसि
 द्धि है ॥ परंतु पर किया नाव में हूँ बडत प्रीत है ॥

रितु रसहे ॥ ताते रससास्त्र दूढ करनार्थ ॥ तव श्री
 ३०७ स्वा मिनो जी प्रसन्न होइ के कहें अन्यतर ससम हूँ को
 पहरम प्रनुभव करावो ॥ तव नंदराय जी के घर प्रभु
 प्रगटे व्रषनांज जी के हां श्री स्वा मिनो जी प्रगटे हो
 उत्स्वरूप पर किया रसको प्रनुभव किए ॥ प्रनुकुटुम्ब
 समस्त भक्तज के नाव रूप सा मिश्री को प्रनुभव की
 ए ॥ इज्जत इज्जत वदन के घर आए तहां सात्विकि न
 क प्रनुकम नार्थ सिद्धि को ॥ गोपायमी को गाय च
 रावन ॥ मिस श्री वृंदावन में नित्य सिद्धा नक्त निरु
 ज स्थित हैं तथा पसु पंथी सब न को रसदां न को
 वसंत पंचमी ते दिन ध ॥ खल द्वारा काम की उन्नतता
 उद्दोपन नाव प्रगट करि विहार की ॥ श्री नाथ जी को
 पाव उत्सव श्री गुसांई जी के घर पथा रिस गरो घर सां
 मिश्री अंगी कास्को ॥ डोल उत्सव चतुर्थ भक्तज सों नि
 कुंज में विहार ॥ प्रथम निर्गुन भक्त को खल पीछे सा
 लिक पीछे राज सा पीछे तामसा ॥ तथा प्रथम श्री स्वा

मिनो जी पीछे श्री यमुना जी पीछे कुमारिका पीछे
 अतिरूपा सब प्रज की ॥ दुतिया पावते कुंज में विहार ॥
 पवित्रा को देवी जी वचके ॥ उद्धार की आजा हिंदो राम
 अपने अपने कुंज में प्रभू संग मूल लहे ॥ प्रारन क्तज
 को प्रनुस्वप्न दिखावे ॥ तथा ताद्रसी वै सब घर पथा
 र के इम सते ॥ तो हं उत्सव माननो श्री गुसांई जी
 स्वप्रसन्न ग्रथ को एहे ॥ इत्यादिक उत्सव को भाव
 न मनत है ॥ परव को नाव पह प्रभु की रधार्य नक्त उत्स
 व मानत है ॥ नयो संवत चैत्र सुदी १ ॥ को नाव की डार दे
 ह आरोग्य है ॥ आसाढी पून्या आछे काल को जो गपवर
 सदी न की कुसल ॥ रघ्रावंधन रघ्राथ ॥ जो रात्र देवी
 पुजन प्रभू मिलनार्थ ॥ विजेद समी प्रभु को सदां विज
 पते ज प्रताप ॥ ६ तरे ॥ होरी दिवारी दसहरा त्योहार
 रूप चोद सरोग दोस सब ना सहो ॥ डांडोरो पने ॥ होरी
 त्योहार मही ना नलिनां ति हो ॥ होरी में प्रभु को विवा
 ह सखी करत है नार धर हो मत है गांठ जोरत है ॥ गारी

उत्सव गावतहें ॥ दोउ स्वरूप की रक्षा ॥ संकाल में तथा सो ॥
 ३०८ मोती में दोन वं संजो जन प्रभु की रक्षा ॥ अर जाहि
 न प्रापत्काल अनेक उपद्रवते प्रभु की रक्षा होइ सो
 परवमानों ॥ दिवारी प्रबोधनी की दोउ परवनी
 हंता को नाव पहें ॥ दिवारी नंदाल पकी परवनी
 दी पदो न हटरी मिस मत्त प्रावतहें ॥ जागरन सगरी
 रात्रि होतहें ॥ प्रबोधनी को कुंज में सगरे मत्त प्राव
 तहें ॥ तहां व्याहखेल प्रादि चतुर्थ मत्त जागरन का
 विरहता पनिवारन करतहें ॥ नोग आरती करि ॥ अ
 नाचा को नाव कहतहें ॥ चंदन पात्रा कुंज की नाचाहि
 मत्त प्रपने घर पधराय चंदन अरग जासतहें ॥
 सो मित्री आदि नोग घर विरह अणि प्रभु को खिदे
 न करि सीतल पना पांन करावतहें ॥ कुंज स्थ श्री वं
 दावन के मत्त दर्शन करि सीतल होतहें ॥ रानया
 आमें दोय नावनंद राय जो पुत्र को राज्या मिखें ककर
 तहें ॥ सगरो व्रज दे खन को आवतहें ॥ तथा प्रभु मत्त

न सहित श्री यमुना जी में नाव खेलन लीला करतहें ॥ र
 यजात्रा को प्रभु रथ परवे रिसगरे व्रज पधारतहें ॥ सग
 रे मत्त के घर सीतल नोग आरोगतहें ॥ तथा निवृज में
 प्रभु जुगल स्वरूप रथ परवे ॥ अर स्वां मित्री तथा स
 खन के कुंज में पधारतहें ॥ फूल मंडली कुंज में फूल
 न के मंदिर में प्रभु पधारतहें ॥ कुंज की जात्रा ॥ व्रस नोज
 जी के घर सांझी श्री स्वां मित्री जी घरतहें ॥ तहां प्रभु सखि
 जे खेव र पधारतहें ॥ पह व्रप नोज पुरा की जात्रा ॥ तै
 वं दस में कार कुंज गा तहां के वासी वं पारण्य में श्री
 आचार्य जी को प्रागद्य ॥ चरणार में श्री गुसांझी को प्रा
 गद्य ॥ श्री नोय जी पर्वत ते संवत १४८६ ॥ श्री वल वरी
 ३ ॥ कौगाठोली में मंगला गोरवा को आज्ञा दी नी संव
 त १५५६ ॥ श्री वल सुदी ३ ॥ पूर्णो मलने मंदिर समरा
 पो ॥ दिन ४५ ॥ मेद्रव्य सब उठगयो ॥ पीछें संवत १५
 ४८ ॥ मेव नवा मोचै साख सुदी ३ ॥ कदिन श्री आचार्य
 जी पाठ वेण ॥ पीछें संवत १६३ ॥ श्री गुसांझी सिज्या
 मंदिर मणि को ठा सवराये ॥ श्री नव नित प्रिय जी श्री

उत्सव आचार्यजी गोघाट आगर मथुरा के दी कहते हैं वुड
 ३०६ की मारी ॥ तब जने उसो जगे आए गजन धावन को प
 धराये पाछे प्रभु को गजन ले आए ॥ श्री मथुरा जाय
 जीर मणरे तो के आगे कराए लसोत हांते पधारे ॥ श्री
 विहल जाय जी श्री गुसाई जी को जन्म नयो तादिन ए
 क ब्राह्मण का सोते पधराय गयो ॥ श्री दारिका जाय
 जी दरजी के घर ते आए श्री गोकुल जाय जी सासुर ते
 आए श्री गोकुल चंद्रमां जी सासुर ते आए महाबन
 ते आए ॥ श्री बाल लस जी श्री गुसाई जी के खेलने
 ॥ सो मथुरा मे श्री आचार्य जी जहात हुते बल ते
 आए ॥ हूसे श्री बाल लस जी श्री यमुना जी को ले
 ते बजाए ॥ श्री मदन मोहन जी श्री लहर मन मढ के श्री
 जेतें घर के गकुर ॥ श्री नंद जी को उत्सव पूस सुदि ॥
 ॥ ज सोदा जी को उत्सव माह सुदि ॥ श्री गकुर जी अ
 गन सुदी ॥ को कूर मे पधारे ॥ कुलह मुख जन्मा
 मे ॥ मुकट सरद ॥ ठिपाग माह सुदि ॥ गो कर्ण प्रज

कुंठ ॥ होरी डंड ते फेद नरे मुख मांडे ॥ पचकारी धरे सि
 आमे गुलाब ॥ श्री वीर धरे चोवा की चोली धरे मुकट
 धरे ॥ ता दिन फेद नरे जाव सो गुलाब की गोरी पास
 सारव ॥ मो जा वडे नए पाछे मुकट धरे ॥ डंडारो पजी ते
 की तेनी या हथिया पो रि ॥ श्री जमुना जी व्रज के
 कुंड सोवर ॥ आदि सुरति श्रम ते व्रज नू मि श्री स्वा ॥
 मिजी जी के उदर दूद पते ॥ गिरिराज जी कुच ते ॥ वृध
 जा श्री स्वा मिजी जी की रोमा बली ॥ पसु पंछी श्री स्वा मि
 जी जी के अगते ॥ श्री स्वा मिजी जी को पंचतत्व अलौ
 किक श्री यमुना जी कुंड आदि जल ॥ व्रज नू मि पथी
 २ ॥ गोवर्द्धन अग्नि ३ ॥ वृध गगन ४ ॥ पसु पंछी पवन
 ५ ॥ अथ सांमित्री करन की रीत ॥ सरवडी की वि
 धि ॥ कायो सर १ ॥ चोयो छां ल्यो सूक डटांक २ ॥ अरगत
 जाटांक २ ॥ एलाची टांक २ ॥ कस्तुरी तोला १ ॥ लोग ध
 ॥ वरास तोला आध ॥ यह सब वारी क कूटिके कंध ड
 धन करि गुलाब जल सो गाढा बांधिए ॥ हाथ सो लपेटे

प्राग जाही ताके लोए फुल्लको परस अंगुलि सों करनी
 ३१० ताको गोली छोटी छोटी बांधि राखे एक एक वामे
 धरे श्रीनाथजी के तीन तीन सात में दिरम ३ तथा
 २ वध्वन कुल के हो २ तथा १ पजीरी की वि
 धि सों सेर १ जोरा डेठ पाव १ = अजवायन = शोध
 पाव = सोंफ = धनीयां = शोध पा = कारी (मरच धरां
 क = ये सब वारी लकूटे के कपर धन कं रिघों में नूँज
 बूराती गूना डारिला डूबा धि वूंदो के लाडू की विधि
 वैसन सेर १ में उरद को चूने पैसा ध मरना विरा
 ठा बांधि घी की कडाही में वूंदो पारिए लडुवा को धरे
 होइ तो मीना मारामें वूंदो पाडि ती गुणी चासनी में द
 र सुगंध डारिए लडुवा बांधिए बूरी धूरी में सेर ५
 तिसे र वरावर चासनी घेवर की विधि मेदारवा
 सों मिलायो सेर १ घी मोन सेर पाव जल सों बांधि
 अर्धी मोलि गुफणी जें एकर स करिए जव धार परती
 जो लि एस्तब घी की कडाही ताती कर पहिले क धूव

सुतर पाछे कटोरी वाकड घी सों मीनी धार डारिए
 घेवर वध्वतो जाय जव पूरा वधे तव काडि तिगुणी चा
 सनी में पागिए तथा बुरा डारिए ताते परे बावर की
 विध मेदा को मोन विसे सदे सगरो घी में वडुत गाढा
 बांधिए पाछे थोरो सों जल दे बांधिए कथार में धरि
 पाछे थोरो थोरी सों जल दे बांधिए कथार में धरि
 पाछे थोरो थोरो जल डारि गुफनी जें सब एकर स
 करिए अति पतरोर सहोइ घी की कडाही में पतरी
 धार डारिए चचाई लुके तव गाढी चासनी पाइये
 तथा बुरा नुखाइये जले वी की विधि मेदा
 मीना सेर १ तामें पैसा ५ मरदही पैसा ५ सोन घी
 डारि पांजी डारिए कडाही में मोहो डो बांधि दूसरे वाती
 सरे दिन अघो चढे तव हाथ सों फेन के धात पात्र
 तथा मोदिके पात्र में नीचे छेद करि रस नु रि कडाही
 घी में तरिती गुणी चासनी पाइये हाथ सों दावि
 एक दिन होइ तो रंघ घी मी लाइये गूंजा की

सांमि विधि मेदासोधी मे नूजिए मेदासेर ॥ मेरांड
 ३११ सेर ॥ डारिए वरास एलाची (मरच डारिए कूच
 रराखिए मेदासेर ॥ मे मोन डारिए पूरिबेलिए पूरण
 भरि कूरापा रीघी मे तरिए ए सेराखें तथा गाडी
 चासनी पाइये ॥ तथा पूरण मे मेवाडूंडारिए ॥ मे
 बातो की विधि ॥ गूसासी मेदाकी पूरिबेलिए तोमे
 पूरण की नाई मेवा नरिए वादो मे पिस्ता आखरोट
 घी मे तरि पीछे ॥ हाख गरी एलाची ॥ मिश्री दुक सुं
 गंध बरास मिलाय मेवाती गूसा मे कूरा पाडिए
 लाडू गोल्ड करिए ॥ तथा कूचोरी की नाई वरिए ए
 मे तरि पाछे गाढी चासनी पाइये ॥ खन
 डाकी विधि मेदासेर ॥ मे मोन सेर पाव ॥ मे लिज
 जसो वांधि पूरी अलि पतरी चांवर के लपेट नसो
 बेलिए पापड सीवडी करि ॥ घी की कडाही मे डारि
 काटिए एक थोर कूचो रहे ॥ कपडा पोनी नी जोपा
 सराखिए विधाय तापर सगरी उतारि बरिए ठा

कैर हिए पाछे एक एक निका सिवरा एलाची वरासडा
 रिभरिके ॥ चारो थोर ले उलटा पचार हास चोखुंटी करि
 पाछे तवा पर तथा कडाही मे थोरो घी डारि तरिका टि
 तवा पर थोरो घी डारि से किए ॥ पपची की विधि ॥ चांव
 रको चून सेर ॥ तां मे मोन पावा ॥ दे पाछे मेदासेर ॥
 ताको मे नद दोउ मिलाय गाढो वांधि गेर जै सोक
 रीघी मे तरि गाढो चासनी पाइये ॥ कपूर जाडी की
 विधि कपडा मे मेदा छांजिता मे सेर ॥ प्रति पाव ॥ मो
 न डारिए खाऊ की नाई पूरिबेलिए तो मे वरा वरास
 एलाची मे लिए भरि के चोखुंटी करि चार के जे लोग
 चारो सिधो मे तरिका टिए ॥ चांसनी नाही ॥ फेनी
 की विधि मेदा अलि मिहि पानी सो वांधि नी के परामे
 पानी जिजाय जपेटा दोय तथा ३ दे रह नदी जे ॥ घरी
 दोय पीछे खलवता मे कूटि गर नरम करि हाथ मे ले
 तार निक से थै सो नरम करे ॥ पाछे थोरो एक पर उलटी
 करिता पर तार विधाय पाछे चांवर को चून घी मे नरम

सांमि करि सांठो जगाय पाछे हाथ सों धी जगाय उठाये केउ
 ३१३ जहिके दूसरी प्रार सांठो जगाइ धी की कडाही में पर प
 क करि गाठी चासनी पाइये ॥ दूसरी बिधि में दाको पानी
 सों बांधि धी मिलाय थारी एक में धरि राखे ॥ बडी बडी
 सेब करि उतटी थारी पर धी जगाय सेब धरत जाइ तार
 बरावर दोय दोय बांधि पाछे दोउ हाथ सों हलुके उठा
 य धी में तरि चासनी पाइये ॥ सरवारी की बिधि चांवर
 को चूंन पेसा दोय नरवै सज को चूंन पेसा दोय नरवै सज
 रे धी में नूजि वरासेर ॥ मिलाये एलाची वरास डारि
 पाछे मेदा सेर ॥ में मोल पाव ॥ डारिये कज कगाठी के
 धिरा खिए ॥ पाछे पूरी पतरी सो वे लि वामे पूरन पेसा
 एक नरी डारि फार बडी वे लि दही थरासी होइ धी में तरि
 चासनी पाइये ॥ दही बडा की बिधि ॥ दही कपडा में बांधि
 धिरा खिए दिन एकरहे ॥ पानी सब लि कसि जाइ ॥ जोहा
 सो होइ तां में चांवर को चूंन जितनो समाय तितने में मो
 न बडुत दे दही में बांधि वरासी वे लि धि की कडाही में

मंद आंच सो से कि पतरी चासनी पाइये ॥ मोखन
 बडा ॥ मेदा एक ज में मोखन जितनो समाय तितने में बांधि
 बडा करि धी में मंद आंच सो से कि गाठी चासनी पाइये त
 था ताते पर बूरा डारि ए दूट तो मोखन मथ के मेदा मिलाइ
 येगी बडी की बिधि चांवर इध में रांधि पर पक होइ तव क
 परा मेडा रन चोडि पाछे कूट के सील पर पो सो एलाची
 वरास डारि ए धी में तरि एगाठी चासनी दीजे ॥ चंद्रक
 ला तथा उपरे ग की बिधि ॥ मेदा गाठो पानी में बांधि धी
 को दोय चार परत दे ॥ पूरी सो वे लि धी में नूजि चासनी दी
 जे चंद्रक ला ताते पर बूरा चूर काइये उपरे ग विना धे दको
 चंद्रक लामे मध्य पूरी सो धरी पारि चासनी दोउ में मनोह
 र लाइ की बिधि ॥ इध आछो तातो होइ तव छाछि डारि
 ए नुरत फाट जाइ तव गाठे क परा में बांधि पानि सब काठि
 ॥ सील पर पो सके नर म करि पाछे चांवर के चूंन में मो
 न डारि वामे मिलाइ गाठो बांधि पूरा में सेव पाडिए ॥
 मंद आंच में पर पक करि गाठि चासनी में वरास एला

सांमि ची डारि जडु वावां धिए तिगुनी चासनी ॥ इह
 ३१३ साकी विधि पहिले दिन चांवरको चून सेर ॥ १ ॥ सांडसे
 र ॥ १ ॥ पानी सो कनक चांछिराखिए ॥ दूसरे दिन कचोरी
 सी वे लिए एक प्रारख सखस्को दांजां लगाइ कडाही में
 मंदः प्रांच सो घी में तरिए ॥ देहर बडी की विधि ॥ चां
 वरको चूनको मोन बिसे छदे वामे दही थोरो सो डारि
 के लिए कहांडी में चरी पारत जाइ मंदः प्रांच में तरिए
 तरी चासनी पाइये बरास एलाची डारिए ॥ सि
 खरन बडी की विधि उरद को दार सेर ॥ ॥ मुगको सेर ॥
 ॥ भिजोई धी लका इर करि पीठी पीस गाठी करि कि
 सेस फे लिए पाछे थोरो सो घी डारि बडी पाटिए पा
 क होइ तव गाठी चासनी में पाणि पाछे सित खरन में ड
 रिए ॥ पूवा की विधि गेहूँ को चून सेर ॥ १ ॥ मोन सेर
 ॥ ॥ डारि गुड सेर ॥ ॥ डारि रंच पानि डारि गाठी कनक वां
 छि मि रच एलाची डारि रात्रि को ठांकि राखिए सबेरे
 घी में पूवा तरिए ॥ माल पूवा की विधि गेहूँ को चूं

न सेर ॥ १ ॥ में गुड सेर ॥ १ ॥ डारि पानि डारि रमाखिए गा
 ठोस ॥ दूसरे दिन बडुत गाठो होइ तो पानि डारिए कर
 स करि मि रच एलाची डारिए घी की लई में कचोरी सो
 फेलाइ के डारिए ॥ दूध पुवा ॥ मेदा दूध में रस पतरो
 करि कडाही में घी थोरो सो डारि कुठोरी भर डारि उता
 रिताले पर वरा भुरकाइये ॥ तवा पूरी की विधि चना की
 लई दूध में वाफिए ॥ पाछे कूटिके चूरन करिए ॥ तामें व
 रास सांड डारि वरास एलाची डारि पूरन करि राखि
 ए ॥ पाछे मेदा को रंच मोन दे ॥ पूरी करि नीतर पूरण म
 रि कचो रसि करि ॥ तवा पर घी डारि मंदः प्रांच सो दा
 उः प्रारसे किए ॥ तिल गुड की विधि ॥ बेसन को
 थोरो सो मोन दे गाठो वांछि नीजे गारा सो सेव पाडि घी
 में तरि ॥ पाछे गुड की चासनी करिता में तिल धी लके
 घी में सेके वाके नीतर डारि सेव डारि लडु वावां धिए ॥
 ॥ चकुली की विधि ॥ चांवरको चून सेर ॥ १ ॥ मोन सेर ॥ ॥
 तामें तिल छिले सेर प्राध ॥ ॥ डारि होग मिस्व हरदी

सांमि ३१४ डारि कुनक गाठि बांधि जलेवी किनाई कुंडाली वारि
 घी में तरिताते परलोन वारी सडा रिए प्रादा कुर
 रासेर १॥ की गाढी चासनी तामे प्रादा पाव ॥ खल में
 कूटि पतरो करि ॥ तथा - प्रतिजी जो धूरी सो करि चा
 सनी में डारि गुलस करी की नाई थारी में विधायत
 कूट करि कतरी करिए चोखूटी ॥ तिल गुंजी की
 विधि खाड सेर १॥ की चासनी में मिरच पेसा दो पना
 पी सडा रिए थारी में करि कूट करि ॥ तिल स
 करी ॥ खाड सेर १॥ की चासनी में धोले तिल सेर १॥
 डारि गुड पापडी की नाई कतरि करिए ॥ तिल बडी
 गरद की दार सेर १॥ की पीठी करि तिल सेर ॥ धोले
 र प्रदा खहोग मिरच डारि बडी छोटी छोटी थारि
 राखिए सखडी में कडुवे तेल में तरिए ॥ प्रजस सखडी
 में घी में तरिताते परलोन डारिए ॥ ठवरी ॥ तिल
 बडी की पीछे पेठा के छिलका के कूट करि मिला
 इ छोटे ठोरे की नाई करिए तथा बडी मोटी करि सुका

यराखिये कहुवे तेल में तरिये ॥ मनि का करि १॥ मेरा सेर १
 में मोन सेर १ पाव दे र्ध में गाढी माडि सो क्र में मनि का करि ६
 ध में डारिये ॥ वावर की र्वा मि चोव पके पैसा दो इ भरि
 सेर पीछे ॥ संजाव करि वार गेरू के वाट सेर र्ध में पैसा २
 भरि मेदा का सेव पैसा २ भर सेर र्ध में ॥ सेव के लडुवा ॥ में दा
 सेर १ में मोन सेर १ गाढी बांधि सेव करि ॥ चौगुना चासनी में
 वरास इलाइची डार लाडु बांधिये ॥ गेरू के चून में सेर में मो
 ना गाढी बांधि मुठिया करि घी में तलि कूटि के वरावर चरा
 सुगंध डारि लाडु बांधिए ॥ गेरू के चून वरावर घी में भूजि
 ए अध भूजो हो इत व सेर चून प्रति ॥ र्ध डारि फेर भूजि पर
 पक करि उतार सेर प्रति सेर १ खाड डारि लुडुवा बांधिये ॥
 गेरू के चून आध सेरा ॥ वसन आध सेर ॥ घी में भूजिये ॥
 पर धक्क होइ त व सेर पीछे र्ध पाव ॥ जर फेर भूजि उतारि
 सेर प्रति सेर डेढ ॥ खाड डारि वरास इलाइची डारि बांधि
 ये ॥ ॥ वसन के चून सेर १ घी में र १ में भूजिये अध भूजो
 होइ त व पाव सेर १ र्ध डारि आले परि पक करि ॥ नीर का

उडारि वरास इलाइची डारि वांधिए **इसरी वांध** चनीको
 डारि मिजायर चंधी में भूजि पासिके फेरघी मेत लिहनी त्या
 उवरास इलाइची डारि वांधिये **इलासिके लडवा** **इधो**
 रा **मे** **सेत सेरे डारि ओराये** जवगाढो हो इतन सेर
 ना **एखांड डारि घी सेर** **डारिए** परिपक्व भरण पोळे खांड
 सेवा डारिए लाइची वास डार वांधिये **भंग कोरून**
 वरावर घी में भूजि वांड इनी **इलाइची वरास सडार वां**
 धिये **भंसकौ इध सेर** **उरद को चून ध्वांस को सेर** **इ**
 ध में ओराय गाढो हो इतव धी जितनो समाइति तनो डारि
 परिपक्व भरण पोळे खांड सेर चार ४ की वासनी करि वरास
 इलाइची डारि वांधिये **खोवा को दूध को खोवा**
 छाकरि घी में भूजि खांड दुगनी डारि वरास एलाची डारि
 वांधिए **खरबूजा को बीज घी में तरि खांड ति**
 गुणी वासनी वरास एलाची डारि वांधिए **सूरज को**
 दूध करि जल में तथा दूध में वाफि कूटिरी जो करि
 घी में भूजि खांड त्रिगुणी वासनी करि घी में भूजि

एतथा त्रिगुण वरास डारिए लाची वरास डारि वांधिए
गुल गुला **गुलाव के फूलन की फाखुरी को ख**
 मोर करि गावे घी में भूजि एफूल परपक होइ तव जले
 बीकी वासनी प्याइये **पूरा की विधि** **गेंदू को चू**
 न सेर प्रति सेर दे गाढी कजक वांधि वेलि **धमंतरि**
 न्यारी न्यारी धरिए **मेदा सेर** **मे मोज पेसा चार भर**
 ध **दे दूध सो वांधि पूरी बेलि घी में भूजि ए** **वेस**
 न पाव **गेंदू को चू न तीन पाव** **मोज पाव** **क**
 लिक् वांधि धमंतरि ए **उचई मेदा सेर** **मोजन**
 हो जल सो वांधि प्रति पतरी बेलि घी में नरम काढि
 ए जिचाई नही **चैस हो** **उपर एक एक राखिए दूध पू**
 री **प्रथम दूध** **ओराय गाढो सांटा सो करिए** **तवा को**
 घी उपरिए ककड घी **दूध डारि मंद** **प्रांच सो फेरि**
 परपक करि ताते पर वरास डारिए दूसरी विधवाही दू
 ध को कपरा को ठकल पेठित वापर फेरिए **अति मंद**
 प्रांच सो **आपुहीति** **प्रति पतरी पूरी उतरि आवे**

सांमिदोयदोयकेवीच बूराधरि ठांकिराखिए तीसरी
 ३१ई विधिदूधकोदोयकडाही परतातो प्रांकिनां लिक्किए
 ए पाछे अग्निकाटिली जो ए बुले पर ठांकिराखिए
 ए पाछे पहरदोय रहन दीजे पाछे एक पात्र में मिला
 य उपर लिचे करिए पाछे थारी प्रांच पर धरि रंच धी
 जगायतां मेडा रि मेद प्रांच सो होइ उपर मिश्री पी
 स तथा बूरा एलाची मोही पी स वरास बूरा में मिला
 य थारी पर नुरकाइये जव पर पन होइ तव जिक्कासि
 ए तथा थारी सो जिक्कासि बूरा नुरकाइये तापा
 सरी पूरी राखिए घरी एकर रहन दीजे मेवाप
 री मेदा सेर १ मोन पाव ॥ है जल सो गठो कां धि
 ॥ आखरोट वादाम पिस्ता दाख मिश्री कूटि एला
 ची वरास मिलाय पूरण धरि पूरी वे लिखी में तरि
 ए ॥ मोहन नोग की विधि गेहूं को चून सेर १ मे
 उत्तम दूजी मध्यम वरावर खांड वरावर धी तरिनी
 चे उत्तारि खांड मेवा सुगंध ॥ स्वत चांवर को तामे

श्री बोल कंछी जी पांडु डा सुंदर मोन डे वाने
 खांड धी वरावर ॥ वे सन को धी वरावर खांड
 दूजी ॥ मेदा को धी वरावर खांड दूजी जल के ठिकां
 जे दूध डारिए ॥ सांटा को मेदा सेर १ ॥ मे दूजी सेर दो
 य दोय ॥ दूध डारि सांटा सो करिए पाछे धी सेर डे
 ठकडाही मेडा रि प्रति तातो होइ तव सांटा डारि भू
 जिये जव दूध सब उपर जाय खुल परे ॥ तव दूसेर पा
 त्र में उता रि राखे पाछे खांड सेर ३ ॥ की चासनी करि
 जव जल की चासनी होइ तव तस्यो सांटा डारि हलाय
 एला ची में वासुगंध डारिए एक थारी में करिए वादाम
 धी लके डारि ॥ प्रांव के रस को सेर एक धी तातो
 करि सेर एक प्रांव के रस डारि हलायतां मे वूरा जित
 जो समाय तथा सेर डारिए लाची वरास डारि हलाय उ
 ता रि ॥ सुरण को दूक बाफि कूटि सेर १ ॥ मे वा रा व
 रि ॥ धी डारि तरि के दूजी २ ॥ बूरा मे वासुगंध डारि
 ए ॥ ठार सांटा मठरी की विधि गेहूं को चून सेर १ ॥

सांभिमैमोनपाव। डारिचोचो भागले जलसावाधि
 ३१७ ए॥ तीनभागपारो वांधिए॥ एक भाग घी को क
 डाहीमें मंद अग्निमें रंचतारिए॥ आधी पाको होइ तब काढि
 कूटिसगरो चून चारो नो गणक ठोकरि बेलिके घीमें तरि
 गाढी चासनी पाइये॥ वडे ठेर छोटे साढा बहुत छोटे मूला
 पकवान॥ मेदा आचसेर॥ विना मोन गाढो वांधिए पा
 रोमें विधसी कसी गहिरी लकीर करिए॥ पाछे गेहूं को चू
 नसेर पाव। ताको पाव। घीको मोन डारि साढा करि वापा
 डारि परतके पर हाथ सो भिजाय लोई करि हाथमें करि अति
 छोटी कचोरी सीत आवे डावता सासों करिके घीमें तरिके
 गाढी चासनी पाइये॥ वार गेहूं को मोटो दरि दूध में
 जिए रातो होइ॥ तब जलमें गुड मिलाय डारिए पर पक हो
 तव उताए॥ सकर पारा चून तथा मेदा सेर १ में पाव। मो
 न दे गाढो वांधिए॥ जाडी पूरी बेली धूरी सो काढि छिमें त
 रि चास जिगाढी डारिए॥ थपडी बेलको चून सेर एक
 १॥ तामें मोन पाव। डारि सो फ मिलाय गाढो वांधि पतरी

पूरी बेली घीमें तरि लो ज डारिए॥ यही वेलमें सेव पाइ
 तरि लो ज डारिए॥ दी वडा की विधि सेर में पाव मोन दे पू
 री बेल गुड को पूरण दे त्रिकोन करि घीमें तरिए॥ तथा दो
 वासों करि तरिके चासनी पाइये॥ पुर माकी विधि मेदा सेर
 में आध सेर मोन दे गाढो वांधि रंच जलमें सारक सरसो क
 रि घीमें तरि गाढी चासनी पाइये॥ खोर को गंरा प्रथम वादाम
 आवे राद पिस्ता छोटे छोटे बूक करि दास ख मिश्री एलाची
 नमस मिलाइ पूरण करि राखिए पाछे गाढी खोर करिए ता
 में पूरण मिलाय मेदा को पूरी करि पूरण भरि तरिके चासनी
 पाइये॥ तथा दूध गाढो आठिके गाढो सो गांवा करिए ताकी
 पूरी बेल में वाको पूरण दे घीमें तरि गाढी चासनी कल छीमे
 ले उपर जपेटिए तथा वे से होंग लिए॥ वर पी दूध को सो
 वासेर १॥ तामें सेर दोय की गाढी चासनी वता सांसी करि का
 सुगंध डारि वामें खोवा डारि थारामें करि कतरी चोखुंटी क
 रिए॥ वासों छि दूध आठये गाढो साढा सो होइ मजाई
 पर नन पावे तामें सुगंध मिश्री डारिए एलाची॥ घैयाद

सांभि धकचिमथिएतथातातोकरमस्थिये मुख्यकाचोर
 ३१८ तकिंमथिए फलतत्वजिफस सोएककदारामेमिथी
 वरासथ लिनीमीमिलाइये पूरणको प्रकार ॥ दा
 रजिजाइ घीमेंतरिवामे मिरच-प्रादिमिलाइये ॥ दा
 रनीजाइतरके कूटिये सरनके टुक करिपरिवाफि
 के तरिके कूटिये मिरच-प्रादिमिलाइये उरदकी
 पीठी घीमेंतरिवामे मिरच-प्रादिमिलाइये पूरीमें
 की करिभरिये कचोरी ॥ मेदामें उरदकी पीठी में
 मसाला मिरच-प्रादिसोंफ डारि घीमेंतरें ॥ तथामे दार
 र ॥ १ में घाव मोठे लेक को मोल दे पूरी करे तांमें उरदकी
 पीठी में रंचमी गेलें त डारि मिरच सोंफ-प्रादि डारि सा
 डी में करे बहुत प्राची होइ घीमेंतरें नी तरलें न डारें स
 रनके टुक टुक वाफ के भरे ॥ घी में तस्यो खावा भरे वडा उ
 रदकी पीठी को वे सनको सरनको ॥ गुलकंद ॥ गुलाब
 के फूल मिथी वरावरि खल करिए करस होइ प्रंमूल
 वान में भरि मुह बांधि महीना एक लो धूप में रहे परप

बहोइ तव नी तर धरे ॥ दूध को पडा खावा तस्यो खावा के
 गुंम गुलाब पाक वादाम पाक गुड पापडी ॥ प्रंमूल पाक
 ॥ चना की दार प्रथम ॥ मिनी सराखे चावर छोइ दाल (म
 लाय न ले करिए सेर १ में पाव घी डारि एक तवे ली में
 तातो करिए तव लो ग ए ली ची गरी डारि तरिए रात होइ
 तव तातो न ज डारि ए खांड मिन्नाय डारि ए मेवा सुगंध ड
 रिए लो करतो सांड न डारि लो ना दिक् डारे ॥ गरा ॥ १ में
 राको धान वा रावा लाको पूरण २ ॥ वैगन के भरता ही
 गवे विघार दे मी श्री डारे ३ ॥ कचे चना बूट कुचल रंच
 तले मी रच डारे ४ ॥ रता चके टुक वाफ के कुचल के मिर
 च-प्रादि ५ ॥ प्रादा पीस के हों गादि डारे १ ॥ दही बांध के
 र सरन को रता चकी रीत ॥ गाढा भरे २ ॥ मूग की दार मि
 जाइ छो की के ११ ॥ चोरा बाफ २ ॥ कचनार की कुली छो की
 के ॥ कै तरिके ८ ॥ कचे मटर तरिके १२ ॥ प्रादा की बाटी
 कटी की विधि १ ॥ मिरच की २ ॥ वे सन की पकोडी की ३ ॥ उ
 रद की पकोरी ४ ॥ मूग की पकोरी ५ ॥ मथी की वे सन

सांभ की बूंदी की १० कचरिया की ११ बगन की टी जीरा की १२
 ३१८ सकर कंदी की ११ सेहजन के फूल की १२ अरुवी की
 १३ ककडी की १४ पान की १५ रतावू की १६ जयवा
 की १७ कचनार की १८ कचमर की १९ कचमर की २०
 २ चोरा की २१ चोरा के फूल की २२ सरसुजा की २३
 अन्ननास की २४ माधुरी के फूल की २५ कचे सिंघाडा
 की २६ कोरा की २७ पेठा की २८ पके आंव की २९ क
 ची आंबी वाप के ३० गवार फली की ३१ आंवरा की ३२ अ
 मली की ३३ धनियां की ३४ करेला की ३५ सोंफ की ३६
 चुका की ३७ हरे कमलगट की ३८ कमल के जड़ की ३९
 टैटी की ४० टैटी के फूल की ४१ कमरान की ४२ अरु
 के पात की ४३ चोई के पात की ४४ वार की ४५ तुमरी
 की ४६ खीरा की ४७ अरिया की ४८ तराई की ४९
 नैनवा की ५० सरसों की भाजी की ५१ राई की भाजी की
 ५२ चना की भाजी की ५३ बालार की ५४ नीडी की
 ५५ कचे केला की ५६ केला के खंभ की गोरी की ५७

कचे पल्लव की ५८ करोंदा की ५९ फट की हं नारंगी
 की ६० चकोतरा की ६१ छोटा रा की ६२ दास की ६३
 सोढा की ६४ जाग की ६५ जाय फर की ६६ गुड की
 ६७ आदा की ६८ लिन की ७० छोकर के सेगर की
 ७१ सडरा की विध ॥ वे सज मे होंग लोन हरदी मि
 स्वदा रिजलदार आदि ये गाढे होइत वधारी में घी
 उपरि धरि धूरा सो वर फी सरखी कतरा ॥ घी में नूँजि
 के कोर राखिए तथा कटी में तथा धाध में लिन बुंडा
 ॥ सोल के दूकवा बडी वाचना हरे तथा नी जे होंदी में
 ॥ किनात को मांड तथा चांवर को बूँज लोन मि रच बहु
 त कटी की नोई आदि ॥ मोठा साक ॥ पेठा वासकर
 कंद के छोटे दूक वे सज हरदी को मि रच जल डारि हों
 डी में चढाई पर पक होइ तब खोड मोठे होइ सित नी डा
 रिसदार होइ तब उतारिए ॥ मेथ कुट की विध ॥
 चना नूँज के धील का सहित सेर १ कचे तोल गे हूं भूँ
 ज सेर १ दार चरद की छडा सेर १ पाव ॥ दार मूग की

सांमि छडी ॥ ६६ पाव ॥ बांवरसेको ॥ ६६ पाव ॥ तु
 ३२ वरकोदारसेकी ॥ ६६ पाव ॥ जुवारीसेर ॥ आधसे
 की ॥ मंथीसेकी मोठे पैसा ३ ॥ भर ॥ सोढीसेकी पै
 सा ३ ॥ भर मोठे ॥ जीरासेके पैसा ३ ॥ भर ॥ हरदीसेकी
 पैसा १ ॥ भर ॥ मिरच बिजासेकी पैसा १ ॥ भर ॥ राई (बु
 नासेकी) १ ॥ भर ॥ पैसाडे ६ ॥ १५ ॥ भर हींग पुलाई ॥ यहस
 वपोसके छांजराखेजो ॥ पांजीमें जोबूवा आमला वा
 छिदिके बलसो ॥ मलावे लोचन सोमि ग्री प्रमोज डारे
 तवसीर घोष मुकाइ धोमें नूजि लिगुली चासनी
 प्याईये लाड ॥ उडदको चूंजसेर वसनसेर धोमें नूज
 चोगुनी चासनी मेदापाव ॥ वसनमगको चूंज पाव
 चोगाको चूंज ॥ न्यारो न्यारो नूजि पाव दूध डारि पार
 ककरि ॥ दूजो वूरा तथा चासनी ॥ वरोम पाव खिरो
 जी कूंद ॥ सकर कंदी धी लके आधसेर कूंद धोमें तरि
 दूनी चासनी ॥ ॥ ससाव सनूजि रंच धोमें पोसके तु
 गुणी चासनी में लाडू तीन पाव मेदापाव वसन अध

पाव जरदको चूंज मोन पाव ॥ दैगा ठो कचोरी की नार्द
 करि धोमें तर पतरी चासनी में घरी दो परहन दो जै
 ॥ नवरात्रको १ ॥ बागा के सरी धापा सोमि ग्री चंद्रक
 ला २ ॥ सोम धापा सिखर नचासनी खीर ३ ॥ लाल
 धापा वासा धी ध ॥ हरो धापा खन मंडा जले की लडू
 वाबूदी ना ५ ॥ गुलाबी धापा खीर चोखानी मखानी
 नो सं जाव ६ ॥ नीबु वई धापा मेवा की सीर सिरव
 र ७ ॥ हवासी धापा ॥ गूरा सं जाव ८ ॥ जंगली धा
 पो सुको लो लो मेवा ठोर ९ ॥ पौरो धापा सोरा सेक्के
 लडू वाखो वा पूवा मिठाई मेवा १० ॥ बागा तास सुपे लो
 र १० ॥ इति श्री भावना संपूर्ण ॥

३२९

जौलतीरव ते॥१॥ श्रीवल्लभ प्रभु जीने प
 र एवु॥ श्रीमाहात्म्य मी गुणवर एवु॥
 ॥२॥ प्रेनी करव न परह न लीहारी॥ सुत
 श्री गोपीनाथ जी परवारी॥ २॥ श्रीवीठल
 नाथ जी सुत कोटा॥ गुणवर एवीसके
 नही क जी मोटा॥ ३॥ श्रीरुक्मणी वह
 जी मो प्रा ए पती॥ कोटा वह जी श्रीपद
 भावती॥ ४॥ खट पुत्र प्रजाट श्रीरुक्म
 णी॥ तैलंग तीलक व नोवन चणी॥ ५॥
 पद भावती नैक पुत्र हुया॥ जेना वेद पु
 रां ए गुण कया॥ ६॥ श्रीगीरचर जी संजाना
 मनी॥ चंद्रनी र श्वीथ की तथ या जामनी
 ॥ ७॥ श्रीगोविंद राय वह जी रांणी॥ प्रेने जो
 वाने प्रा व्याई द्रांणी॥ ८॥ श्रीवालरुस जी क
 मला वह॥ प्रेने जो वाने प्रा व्यासह॥ ९॥ श्रीगो

कुलनाथजीनेपादबती॥समतोतनहीरं
 जारती॥१०॥श्रीरघुनाथजीजानकीसोई
 ये॥कुबनीरखीनीरखीनीजननमोहाये
 ॥११॥श्रीजदनाथजीसंगमाहारांणी॥श्री
 नारुपचतुरमजुरीवाणी॥१२॥श्रीचन
 स्पामजीसंगहसावती॥श्रीनोवरणवकरा
 येनीतप्रती॥१३॥श्रीनोप्रातर्नठीनेसमर
 करे॥तेनाजनमजनमनाग्रगदरे॥
 ॥१४॥श्रीतोयातेसरुपसोहामणी॥श्रीज
 जोईहरीदासलीयेवारणी॥१५॥श्री
 ॥तारेमुखडेमीठीमीठीरेमाननरी॥
 मेतोअजबअनोपमदीठीरेमाननरी
 री॥अदावननीकुजमासखीर्नजले
 नजलेवाईजी॥सुएतामारेसुजी
 बुजीगईमेतोपरमानवरेवाया॥
 ॥मु॥१॥संकशसरखासरखीनेठाकव

जीवमजी॥श्रीदामुनवरसरखातोतव्या
 तेनेरुववरनरहीतना॥मु॥१॥अंगकेवा
 व्या॥श्रीजीतोतएासरखीकनकअरने
 काजेजी॥व्याकलकीजीरेसरैवेसुदरी
 अनेमेतीकुलनीताज॥मु॥३॥जदुवरनी
 नेदेकरेसरखीपलकनखसेपाकीजी॥
 मीठीमीठांवचनकहीनेमनेवेरणश्री
 नेनागीमुरलीमाननरी॥४॥मलवाली
 भदनीनरीसरखीअचरकुवीलानेछाजे
 जी॥सरगमत्तुपालथकीप्रेनीछुनगग
 नभागाजे॥मु॥५॥जनजीखानाप्रदुपा
 तलासरखीबलबंतनजनोचंदजी॥बन
 वनचारेगावडीरेकरेनादतणाघनघो
 र॥मु॥६॥॥कोनुदोकासएगारोरेआ
 जोनीरह्योरोकाजेमारगमारोरेआजो
 ने॥हुअलबेलीअकलीसरखीगह्याताज
 नापाणीजी॥अप्रलवेलोआवीमलोका

हे नवतानवता ठाठ ॥ सा ॥ १॥ जेना मुख
खमाते बीडी पांन नी सरवी मर कलडामा
भाते जी ॥ बंनंद कवर नोलाडलो मने वल
जपो मुमो प्रावे ॥ सा ॥ २॥ मोर मुकटक कली
काळुनी सरवी प्रज्जर र सातावे ए जी ॥ ज
लज मुनाने कांठ डे जोई जोई नेन चावेन
ए ॥ सा ॥ ३॥ पातली योजी पातला सरवी
जे संगा प्रीत जी ॥ लाडलडा वे सरवी प्र
पणे गाय गाय ने गवरावे जी त ॥ सा ॥ ४॥
गेली गेली सन करे सरवी प्र र सा ॥ ५॥
कोई जी ॥ ने ए प्रटक्या ने हस मारे मने
मोही मोही ॥ सा ॥ ६॥ मुख मर कोडे माव जी
सरवी मर कलडामा भाते जी ॥ ताम एली
तर्न जाव सह तोवारी वारी जान ॥ सा ॥ ७॥
जीरवा ना प्रज्ज पातला सरवी चंचल वीत
ना चोर जी ॥ समो तो की जो सा मले वसा
वो गो कल गां मा ॥ सा ॥ ८॥ ॥ श्री ॥ ॥

अदला सो जे छे रे अंग ॥ १॥ पीलो पाग वस
मारे वो ल्यो ॥ मोला जोर बन्यो छे रे तो रो ॥
१२॥ पीला के सरी तील कधरीयां ॥ अंगे लेप
न ते नारे करीया ॥ १३॥ पीला हे मद्रा करमं
ये ॥ पीला हे मवा जु बध बाहे ॥ १४॥ पीला सो
ना साकली रे सारी ॥ जाउ ववे द्रतणी रे ब
लारी ॥ १५॥ प्रभु पीलो पीतावर वेसा ॥
वरणागी मां जाव छे लेसा ॥ १६॥ प्रभु पी
ली पां बडी रे थोडी ॥ माहे सुगंध द्रस्तुरी
रे थोडी ॥ १७॥ हवे उजलो रंग वसा ॥ सु
रली धर मन मारे जा ॥ १८॥ उजली ज
खडली प्रणी प्राणी ॥ उजली कात प्रेम
वेपारी ॥ १९॥ उजलो क मर वेसा वा

અથવાં ચરંગનુધોલ ॥ લખ્યું ॥ ॥ પા-ચરંગં પ્રભુજી ॥
 નાગવે ॥ ગાતા-ચંગની રમલથા ॥ ૧ ॥ પેલો લાલગુલાબી
 નોરંગા ॥ સવલો સોને છે રે-અં ॥ ૨ ॥ લાલ મોલી ઉરંગ
 પેરાતુ ॥ જોતા મુષડુદી સે છે માતુ ॥ ૩ ॥ લાલ ગલેગુ
 જાના રે ૧૨ ॥ લાલ મોરલ પરમર સાલ ॥ ૪ ॥ લાલ
 લોબડી લાલ ને અંગે ॥ લાલ મોજડી ચરણ ને સંગે ॥
 ॥ ૫ ॥ લાલ જામો પે સોડરી આની ॥ લાલ સોને છે પ
 વગની રે પાની ॥ ૬ ॥ રાતો ગપ્રભુજી નો ન્યારો ॥ નીલા
 રંગ માસો જે છે સારો ॥ ૭ ॥ નીલી લાલ મુગર માંડ
 છે ॥ તેની સો જાની કાતલ છે ॥ ૮ ॥ નીલાંત ચસી
 ચડે રે સરી ॥ નીલ સોને છે હલધોર વીર ॥ ૯ ॥
 નીલી પાંન વીડી મુષવાસ ॥ આપી પ્રેમ જનને પા
 સ ॥ ૧૦ ॥ નીલા ક્રેડે વાધ્યા છે રે પરકા ॥ જોતા જો
 રવ ન્યા છે રે લટકા ॥ ૧૧ ॥ પેલો પ્રીતમ પીલો રે રંગ ॥

ઘો ॥ દેવતાં દીયાલ જીનો મોહલાગો ૨ ॥ ૩ ॥ ઉજલા
 મુગતા ફલ હાર ॥ ૪ ॥ ઉજલા સોની તાસણગાર ॥ ૫ ॥
 ઉજલા જાવે ફૂલ બેઢે ॥ કંઠે હાર ઘાલા ને હરી
 લેઢે ॥ ૬ ॥ ૨૩ ॥ ઉજલો ઘુઘરાનો ઘમકાર ॥
 ઉજલો સોની તાસણગાર ॥ ૭ ॥ ૨૪ ॥ ઉજલાંના
 થજીના રે નાંમ ॥ જપે જીવન તેના રે વાંમ ॥
 ૨૫ ॥ હવે રુદ્ધાના રૂપ વષાંણુ ॥ સ્યામરંગર
 દે માં રે આણુ ॥ ૨૬ ॥ સ્યામમેઘગરજના રે કર
 તો ॥ પાંણી જો કૂલ ઉપર કરતો ॥ ૨૭ ॥ સ્યામજ
 તરે જ મુના જીનાં પાંણી ॥ જો પીગોલી ગોરસની
 રે આણી ॥ ૨૮ ॥ જો પીવે મેતી આગલધરી યાં ॥
 પ્રહ્મપ્રીતે તી આછમન કરીયા ॥ ૨૯ ॥ હરીદ
 સસો નારે જો જા ॥ ૩૦ ॥ હરદે કમલમારે

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८ ॥
जगत्पुत्रं जगत्पुत्रं जगत्पुत्रं जगत्पुत्रं ॥ ३९ ॥
वाटे तीक्ष्णं चोनावे ॥ ४० ॥ गोप कहे ॥ ४१ ॥
हो कीर्ती जे तीजो ॥ ४२ ॥ तव लोके वरपद मे ती
जो ॥ ४३ ॥ तव लोके ॥ ४४ ॥ ताटी जसो दा ने जो ॥ ४५ ॥
सा रो जे हो तो जानी आशी आघो जो ॥ ४६ ॥ मेघ वर
सो ने ने वाला गा च वा जो ॥ ४७ ॥ गोप ग यो र व ड क मा
स व जो ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ क र ता ते जं म च्छा र वी त्या
जो ॥ ५० ॥ वा ल वा म्भ ता रे जो पे मा डी च ता जो ॥ ५१ ॥
ख चो ल तो ने घर मा र्ही जी आ वो जो ॥ ५२ ॥ ता रे स
मा च र मा ये स ज ला वो जो ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ क रा ल
के ते स र वे सा च जो ॥ ५५ ॥ ह स की च्छु क प द प द
का च जो ॥ ५६ ॥ स्व मा ज्जु ने स र ग ह डि मा ती
जो ॥ ५७ ॥ हा थ घ स तो ने गो प क डे का ती जो ॥ ५८ ॥
डो सी त ज प र ते न व चा लु जो मा रु आ ग ल र ही
ने घर र घालु जो ॥ ५९ ॥ स र दे रे जो व ह ने सा स जो
॥ ६० ॥ दो क रो के ता रे डो सी पा डे ॥ ६१ ॥ ह वे जो
कु ल मा ते मा र डे ये जो ॥ ६२ ॥ वा ज आ ए पा ते नं द

Shri Gopallal Maharaj
Karni Seethodhavan
Karni Seethodhavan